

• षोडशम् •

संस्कृतवाक्यप्रबोधः

श्रीमत्स्वामिदयानन्दसरस्वतीनिर्मितः

पठनपाठनव्यवस्थायां द्वितीयं पुस्तकम्

प्रकाशक :

वैदिक पुरातनकालय

दयानन्दाश्रम, केसरगंज, अजमेर

प्रकाशक —

वैदिक पुस्तकालय,

रघुनन्द आश्रम, अजमेर

३०५००१

इसकी रजिस्टरी कराई गई है

पृष्ठचब्दः १,१६,०८,५३,०८६

पञ्चदशावृत्तिः

५०००

वि० संवत् २०४३

मन् १६८६

मूल्य

रुपये ५.०० पै.

मुद्रक—

वैदिक यन्त्रालय,

अजमेर

भूमिका



मैंने इस “संस्कृतवाक्यप्रबोध” पुस्तक को बनाना अवश्य इसलिये समझा है कि शिक्षा को पढ़ के कुछ कुछ संस्कृत भाषण का आना विद्यार्थियों को उत्साह का कारण है । जब वे व्याकरण के सन्धिविषयादि पुस्तकों को पढ़ लेंगे तब तो उनको स्वतः ही संस्कृत बोलने का बोध हो जायगा, परन्तु यह जो संस्कृत बोलने का अभ्यास प्रथम किया जाता है, वह भी आगे आगे संस्कृत पढ़ने में बहुत सहाय करेगा । जो कोई व्याकरणादि ग्रन्थ पढ़े बिना भी संस्कृत बोलने में उत्साह करते हैं, वे भी इसको पढ़के व्यवहारसम्बन्धी संस्कृत भाषा को बोल और दूसरे का सुनके भी कुछ कुछ समझ सकेंगे । जब बाल्यावस्था से संस्कृत बोलने का अभ्यास होगा तो उसको आगे आगे संस्कृत बोलने का अभ्यास अधिक अधिक ही होता जायगा । और जब बालक भी आपस में संस्कृत भाषण करेंगे तो उनको देख कर जवान-वृद्ध मनुष्य भी संस्कृत बोलने में रुचि अवश्य करेंगे । जहां कहीं संस्कृत के नहीं जाननेवाले मनुष्यों के सामने दूसरे को अपना गुप्त अभिप्राय समझाना चाहें तो वहां संस्कृत भाषण काम आता है ।

जब इसके पढ़ानेवाले विद्यार्थियों को ग्रन्थस्थ वाक्यों को पढ़ावें उस समय दूसरे वैसे ही नवीन वाक्य बना कर सुनाते जावें, जिससे पढ़नेवालों की बुद्धि बाहर के वाक्यों में भी फैल जाय ।

और पढ़नेवाले भी एक वाक्य को पढ़के उसके सदृश अन्य वाक्यों की रचना भी करें कि जिससे बहुत शीघ्र बोध हो जाय, परन्तु वाक्य बोलने में स्पष्ट अक्षर, शुद्धोच्चारण, सार्थकता, देश और काल वस्तु के अनुकूल जो पद जहां बोलना उचित हो वहीं बोलना और दूसरे के वाक्यों पर ध्यान देकर सुनके समझना । प्रसन्नमुख, धैर्य, निरभिमान और गम्भीरतादि गुणों को धारण करके क्रोध, चपलता, अभिमान और तुच्छतादि दोषों से दूर रह कर अपने वा किसी के सत्य वाक्य का खण्डन और अपने अथवा किसी के असत्य का मण्डन कभी न करें और सर्वदा सत्य का ग्रहण करते रहें ।

इस ग्रन्थ में संस्कृत वाक्य प्रथम और उसके सामने भाषार्थ इसलिये लिखा है कि पढ़नेवालों को सुगमता हो और संस्कृत की भाषा और भाषा का संस्कृत भी यथायोग्य बना सकें ।

काशी, फा० शु० ११
[१९३६ वि०]

दयानन्दसरस्वती

अथ विषयसूचीपत्रम्

क्रम	पृष्ठ	क्रम	पृष्ठ
सं०	सं०	सं०	सं०
१ गुरुशिष्यवात्तिलाप प्रकरणम् १		१७ गवादिदोहन प्र०	१७
२ नामनिवासस्थान प्र०	३	१८ क्रयविक्रयार्थ प्र०	१७
३ गृहाश्रम प्र०	५	१९ कुसीद प्र०	१८
४ भोजन प्र०	६	२० उत्तमर्णाधिमर्ण प्र०	१८
५ देशदेशान्तर प्र०	७	२१ राजप्रजासम्बन्ध प्र०	१८
६ सभा प्र०	१०	२२ साक्षि प्र०	१८
७ आयवित्तचक्रवर्तिराज्य प्र० ११		२३ सेव्यसेवक प्र०	२१
८ राजप्रजालक्षण-		२४ मिश्रित प्र० [१]	२२
राजनीत्यनीतिप्र०	११	२५ गमनागमन प्र० [२]	२२
९ शत्रुवश प्र०	२१	२६ रोग प्र०	२३
१० वैश्यव्यवहार प्र०	१३	२७ मिश्रित प्र० [२]	२४
११ कुसीदग्रहण प्र०	१३	२८ विवाहस्त्रीपुरुषालाप प्र०	२५
१२ नौकाविमानादिचालन प्र० १३		२९ स्त्रीश्वश्रूश्वशुरादिसेव्य-	
१३ क्रयविक्रय प्र०	१४	सेवक प्र०	२६
१४ गमनागमन प्र० [१]	१५	३० ननन्दभ्रातृजायावाद प्र०	२६
१५ क्षेत्रवपन प्र०	१६	३१ सायंकालकृत्य प्र०	२८
१६ शस्यच्छेदन प्र०	१६	३२ शरीरावयव प्र०	२८

संस्कृतवाक्यप्रबोधः

क्रम	पृष्ठ	क्रम	पृष्ठ
नाम प्रकरण		नाम प्रकरण	
सं०	सं०	सं०	सं०
३३ राजसभा प्र०	३३	४४ कारु प्र०	४४
३४ ग्राम्यपशु प्र०	३४	४५ अयस्कार प्र०	४५
३५ ग्रामस्थपक्षि प्र०	३६	४६ सुवर्णकार प्र०	४५
३६ वन्यपशु प्र०	३७	४७ कुलाल प्र०	४६
३७ वनस्थपक्षि प्र०	३८	४८ तन्तुवाय प्र०	४६
३८ तिर्यग्जन्तु प्र०	६६	४९ सूचीकार प्र०	४६
३९ जलजन्तु प्र०	४०	५० मिश्रित प्र० [२]	४६
४० वृक्षवनस्पति प्र०	४१	५१ लेख्यलेखक प्र०	५२
४१ औषध प्र०	४२	५२ मन्तव्यामन्तव्य प्र०	५३
४२ आत्मीय प्र०	४३	५३ [परिशिष्ट]	५५-५७
४३ सामन्त प्र०	४४		

* ओ३म् *

परमगुरवे परमात्मने नमः

अथ संस्कृतवाक्यप्रबोधः

गुरुशिष्यवार्तालापप्रकरणम्

भोः शिष्य ! उत्तिष्ठ, प्रातःकालो
जातः ।

उत्तिष्ठामि ।

अन्ये सर्वे विद्यार्थिन उत्थिता
न वा ?

अधुना तु नोत्थिता खलु ।

तानपि सर्वानुत्थापय ।

सर्व उत्थापिताः ।

सम्प्रत्यस्माभिः किं कर्तव्यम् ?

आवश्यकं शौचादिकं कृत्वा
सन्ध्यावन्दनम् ।

आवश्यकं कृत्वा सन्ध्योपासिताः
परमस्माभिः किं करणीयम् ?

अग्निहोत्रं विधाय पठत ।

पूर्वं किं पाठनीयम् ?

वर्णोच्चारणशिक्षामधीध्वम् ।

पश्चात्किमध्येतव्यम् ?

हे शिष्य ! उठ सवेरा हुआ ।

उठता हूँ ।

और सब विद्यार्थी उठे वा नहीं ?

अभी तो नहीं उठे हैं ।

उन सबको भी उठा दे ।

सब उठा दिये ।

इस समय हमको क्या करना
चाहिए ?

आवश्यक शरीरशुद्धि करके सन्ध्यो-
पासना ।

आवश्यक कर्म करके सन्ध्योपासन
कर लिया, इसके आगे हमको क्या
करना चाहिये ?

अग्निहोत्र करके पढ़ो ।

पहिले क्या पढ़ना चाहिये ?

वर्णोच्चारणशिक्षा को पढ़ो ।

पीछे क्या पढ़ना चाहिये ?

किञ्चित्संस्कृतोक्तिबोधः क्रियताम् ।

पुनः किमभ्यसनीयम् ?

यथायोग्यव्यवहारानुष्ठानाय
प्रयतध्वम् ।

कुतोऽनुचितव्यवहारकर्तुं विद्यैव
न जायते ।

को विद्वान् भवितुमर्हति ?

यः सदाचारी प्राज्ञः पुरुषार्थी
भवेत् ।

कीदृशादाचार्यादिधीत्य पण्डितो
भवितुं शक्नोति ?

अनूचानतः ।

अथ किमध्यापयिष्यते भवता ?

अष्टाध्यायीमहाभाष्यम् ।

किमनेन पठितेन भविष्यति ?

शब्दार्थसम्बन्धविज्ञानम् ।

पुनः क्रमेण किं किमध्येतव्यम् ?

शिक्षाकल्पनिघण्टुनिरुक्तछन्दो-

ज्योतिषाणि वेदानामङ्गानि

मीमांसावैशेषिकन्याययोगसांख्य-

वेदान्तान्युपाङ्गान्यायुर्धनुर्गान्धर्वार्थी-

पवेदानैतरेयशतपथसामगोपथ-

ब्राह्मणान्यधीत्य ऋग्यजुस्सामाऽ-

कुछ संस्कृत बोलने का ज्ञान किया
जाय ।

फिर किसका अभ्यास करना चाहिए ?

यथोचित व्यवहार करने के लिये
प्रयत्न करो ।

क्योंकि उल्टे व्यवहार करनेहारे को
विद्या ही नहीं होती ।

कौन मनुष्य विद्वान् होने के योग्य
होता है ?

जो सत्याचरणशील, बुद्धिमान्,
पुरुषार्थी हो ।

कैसे आचार्य से पढ़ के पण्डित हो
सकता है ?

पूर्ण विद्यावान् वक्ता से ।

अब आप इसके अनन्तर हमको क्या
पढ़ाइयेगा ?

अष्टाध्यायी और महाभाष्य ।

इसके पढ़ने से क्या होगा ?

शब्द, अर्थ और [उनके] सम्बन्धों का
यथार्थ बोध ।

फिर क्रम से क्या क्या पढ़ना चाहिए ?

शिक्षा, कल्प, निघण्टु, निरुक्त, छन्द

और ज्योतिष वेदों के अंग । मीमांसा

वैशेषिक, न्याय, योग, सांख्य और

वेदान्त उपाङ्ग । आयुर्वेद, धनुर्वेद

गान्धर्ववेद और अथर्ववेद उपवेद । ऐतरेय

शतपथ, साम और गोपथ ब्राह्मण

थर्ववेदान् पठत ।

एतत्सर्वं विदित्वा किं कार्यम् ?

धर्मजिज्ञासाऽनुष्ठाने एतेषामेवा-
ऽध्यापनं च ।

ग्रन्थों को पढ़ के ऋग्वेद, यजुर्वेद,
सामवेद और अथर्ववेद को पढ़ो ।

इन सबको जान के फिर क्या करना
चाहिये ?

धर्म के जानने की इच्छा तथा उस
का अनुष्ठान और इन्हीं को सर्वदा
पढ़ाना ।

नामनिवासस्थानप्रकरणम्

तव किन्नामास्ति ?

देवदत्तः ।

कोऽभिजनो युवयोर्वर्तते ?

कुरुक्षेत्रम् ।

युष्माकं जन्मदेशः को विद्यते ?

पञ्चालाः ।

भवन्तः कुत्रत्याः ?

वयं दाक्षिणात्याः स्मः ।

तत्र का पूर् वः

मुम्बापुरी ।

इमे क्व निवसन्ति ?

नयपाले ।

अयं किमधीते ?

व्याकरणम् ।

त्वया किमधीतम् ?

न्यायशास्त्रम् ।

तेरा क्या नाम है ?

देवदत्त ।

तुम दोनों का जन्मदेश कौन है ?

कुरुक्षेत्र देश ।

तुम्हारा जन्मदेश कौन है ?

पञ्जाब ।

आप कहां के हो ?

हम दक्षिणी हैं ।

वहां आपके निवास की कौन नगरी
है ?

मुम्बई ।

ये लोग कहां रहते हैं ?

नयपाल में ।

यह क्या पढ़ता है ?

व्याकरण को ।

तूने क्या पढ़ा है ?

न्यायशास्त्र ।

अयं भवदीयश्छात्रः किं प्रचर्चयति?

ऋग्वेदम् ।

त्वं किं कर्तुं गच्छसि ?

पाठाय ब्रजामि ।

कस्मादधीषे ?

यज्ञदत्तात् ।

इमे कुतोऽधीयते ?

विष्णुमित्रात् ।

त्वयि पठति कियन्तः संवत्सरा
व्यतीताः ?

पञ्च ।

भवान् कतिवार्षिकः ?

त्रयोदशवार्षिकः ।

त्वया पठनारम्भः कदा कृतः ?

यदाहमष्टवार्षिकोऽभूवम् ।

तव मातापितरौ जीवतो न वा ?
जीवतः ।

तव कति भ्रातरो भगिन्यश्च ?

त्रयो भ्रातर एका च
भगिन्यस्ति ।

तेषु त्वं ज्येष्ठस्ते, सा, वा ?

अहमेवाग्रजोऽस्मि ।

तव पितरौ विद्वांसौ न वा ?

यह आपका विद्यार्थी क्या पढ़ता है ?

ऋग्वेद को ।

तू क्या करने को जाता है ।

पढ़ने के लिये जाता हूँ ।

किससे पढ़ता है ?

यज्ञदत्त से ।

ये किससे पढ़ते हैं ?

विष्णुमित्र से ।

तुम्हको पढ़ते हुए कितने वर्ष बीते ?

पांच ।

आप कितने वर्ष के हुए ?

तेरह वर्ष के ।

तूने पढ़ने का आरम्भ कब किया था ?

जब मैं आठ वर्ष का हुआ था ।

तेरे माता-पिता जीते हैं वा नहीं ।
जीते हैं ।

तेरे कितने भाई और बहिन हैं ?

तीन भाई और एक बहिन है ।

उनमें तू ज्येष्ठ वा तेरे भाई अथवा
बहिन ?

मैं ही सबसे पहिले जन्मा हूँ ।

तेरे माता-पिता विद्या पढ़े हैं वा
नहीं ?

महाविद्वांसौ स्तः ।

तर्हि त्वया पित्रोः सकाशात्कुतो
न विद्या गृहीता ?

अष्टमवर्षपर्यन्तं कृता ।

अत ऊर्ध्वं कुतो न कृता ?

मातृमान् पितृमानाचार्यवान्
पुरुषो वेदेति शास्त्रविधेः ।

अन्यच्च गृहे कार्यबाहुल्येन
निरन्तरमध्ययनमेव न जायते ।
अतः परं कियद्वर्षपर्यन्तमध्येष्यसे ?

पञ्चत्रिंशद्वर्षाणि ।

बड़े विद्वान् हैं ।

तो तूने माता-पिता से विद्या ग्रहण
क्यों न की ?

आठवें वर्ष पर्यन्त की ।

इससे आगे क्यों न की थी ?

माता-पिता से आठवें वर्ष पर्यन्त,
इसके आगे आचार्य से पढ़ने का शास्त्र
में विधान है इससे ।

और भी घर में बहुत काम होने से
निरन्तर पढ़ना ही नहीं होता ।

इसके आगे कितने वर्ष पर्यन्त पढ़ेगा ?

पैंतीस वर्ष तक ।

गृहाश्रमप्रकरणम्

पुनस्ते का चिकीर्षास्ति ?
गृहाश्रमस्य ।

किं च भोः पूर्णविद्यस्य
जितेन्द्रियस्य परोपकारकरणाय
संन्यासाश्रमग्रहणं शास्त्रोक्तमस्ति
तन्न करिष्यसि ?

किं गृहाश्रमे परोपकारो न भवति ?
यादृशः संन्यासाश्रमिणा कर्तुं
शक्यते न तादृशो गृहाश्रमिणा-
ऽनेककार्यैः प्रतिबन्धकत्वेनाऽस्य
सर्वत्र भ्रमणाशक्यत्वात् ।

फिर तुझको क्या करने की इच्छा है ?
गृहाश्रम की ।

क्यों जी ! जिसको पूर्ण विद्या और
जो जितेन्द्रिय है उसको परोपकार
करने के लिये संन्यासाश्रम का ग्रहण
करना शास्त्रोक्त है, इसको न करोगे ?
क्या गृहाश्रम में परोपकार नहीं होता ?
जैसा संन्यासाश्रमी से मनुष्यों का
उपकार हो सकता है वैसा गृहाश्रमी
से नहीं हो सकता, क्योंकि अनेक
कामों की रुकावट से इसका सर्वत्र
भ्रमण ही नहीं हो सकता ।

भोजनप्रकरणम्

नित्यः स्वाध्यायो जातो भोजन-
समय आगतो गन्तव्यम् ।

तव पाकशालायां प्रत्यहं भोजनाय
किं किं पच्यते ?

शाकसूपौदशिवत्कौदनापूपादयः ।

किं वः पायसादिमधुरेषु रुचि-
र्नास्ति ?

अस्ति खलु परन्त्वेतानि कदाचिद्
कदाचिद् भवन्ति ।

कदाचिच्छुक्ली श्रीखण्डादयोऽपि
भवन्ति न वा ?

भवन्ति परन्तु यथर्तुयोगम् ।
सत्यमस्माकमपि भोजनादिकमेव-
मेव निष्पद्यते ।

त्वं भोजनं करिष्यसि न वा ?

अद्य न करोम्यजीर्णतास्ति ।

अधिक भोजनस्येदमेव फलम् ।

बुद्धिमता तु यावज्जीर्यते तावदेव
भज्यते ।

अतिस्वल्पे भुक्ते शरीरबलं
ह्रसत्यधिके चातः सर्वदा मिता-
हारी भवेत् ।

योऽन्यथाऽऽहारव्यवहारौ करोति
स कथं न दुःखी जायेत ?

नित्य का पढ़ना-पढ़ाना हो गया,
भोजनसमय आया, चलना चाहिये ।

तुम्हारी पाकशाला में प्रतिदिन भोजन
के लिये क्या क्या पकाया जाता है ?

शाक, दाल कढ़ी, भात, पुआ और
रोटी आदि ।

क्या आप लोगों की खीर आदि मीठे
भोजनों में रुचि नहीं है ?

है सही परन्तु ये भोजन कभी कभी
होते हैं ।

कभी पूरी, कचौड़ी, शिखरन आदि भी
होते हैं वा नहीं ?

होते हैं परन्तु जैसा ऋतु का योग हो ।
ठीक है, हमारे भी भोजन आदि ऐसे
ही बनते हैं ।

तू भोजन करेगा वा नहीं ?

आज नहीं करता अजीर्णता है ।

अधिक भोजन का यही फल है ।

बुद्धिमान् पुरुष तो जितना पचे उतना
ही खाता है ।

बहुत कम और अत्यधिक भोजन करने
से शरीर का बल घटता है इससे सब
दिन मिताऽऽहारी होवे ।

जो उलट-पलट आहार और व्यवहार
करता है वह क्यों न दुःखी होवे ?

येन शरीराच्छमो न क्रियते स
नैव शरीरसुखमाप्नोति ।

येनात्मना पुरुषार्थो न विधीयते
तस्यात्मनो जलमपि न जायते ।

तस्मात्सर्वैर्मनुष्यैर्यथाशक्ति
सत्क्रिया नित्यं साधनीया ।

भो देवदत्त? त्वामहं निमन्त्रये ।

मन्येऽहं कदा खल्वागच्छेयम् ?

श्वो द्वितीयप्रहरमध्ये आगन्तव्यम् ।

आगच्छ भो आसनमध्यास्स्व
भवता ममोपरि महती कृपा
कृता ।

जो शरीर से परिश्रम नहीं करता वह
शरीर के सुख को प्राप्त नहीं होता ।

जो आत्मा से पुरुषार्थ नहीं करता
उसको आत्मा का बल भी नहीं
होता ।

इससे सब मनुष्यों को यथाशक्ति
उत्तम कर्मों की साधना नित्य करनी
चाहिये ।

हे देवदत्त ! मैं तुम्हारा निमन्त्रण
करता हूँ ।

मैं मानता हूँ परन्तु किस समय
आऊँ ?

कल दोपहर दिन चढ़े आना चाहिये ।

हे सुजन ! आइये आसन पर बैठिये ।
आपने मुझ पर बड़ी कृपा की ।

देशदेशान्तरप्रकरणम्

भवानेतान् जानातीमे महा-
विद्वांसः सन्ति ।

किन्नामान एते कुत्रत्याः खलु ?

अयं यज्ञदत्तः काशीनिवासी ।

विष्णुमित्रोऽयं कुरुक्षेत्रवास्तव्यः ।

आप इनको जानते हैं ? ये बड़े विद्वान्
हैं ।

इनके क्या नाम और ये कहां कहां के
रहनेवाले हैं ?

यह यज्ञदत्त काशी में निवास करता
है ।

यह विष्णुमित्र कुरुक्षेत्र में वसता है ।

सोमदत्तोयं माथुरः ।	यह सोमदत्त मथुरा में रहता है ।
अयं सुशर्मा पर्वतीयः ।	यह सुशर्मा पर्वत में रहता है ।
अयमाश्वलायनो दाक्षिणात्योऽस्ति ।	यह आश्वलायन दक्षिणी है ।
अयं जयदेवः पाश्चात्यो वर्तते ।	यह जयदेव पश्चिमदेशवासी है ।
अयं कुमारभट्टो वाङ्मो विद्यते ।	यह कुमारभट्ट बंगाली है ।
अयं कापिलेयः पाताले निवसति ।	यह कापिलेय पाताल अर्थात् अमेरिका में रहता है ।
अयं चित्रभानुर्हरिवर्षस्थः ।	यह चित्रभानु हिमालय से उत्तर हरिवर्ष अर्थात् यूरोप में रहता है ।
इमौ सुकामसुभद्रौ चीननिकायौ ।	ये सुकाम और सुभद्र चीन के वासी हैं ।
अयं सुमित्रो गन्धारस्थायी ।	यह सुमित्र गन्धार अर्थात् काबुल कन्धार का रहनेवाला है ।
अयं सुभटो लङ्काजः ।	यह सुभट लंका में जन्मा है ।
इमे पञ्च सुवीरातिबलसुकर्मसुधर्म- शतधन्वानो मारवाः ।	सुवीर, अतिबल, सुकर्मा, सुधर्मा और शतधन्वा ये पांच मारवाड़ के रहने- वाले हैं ।
एते मया ऽऽमन्त्रिताः स्वस्वस्था- नादागताः ।	ये सब मेरे बुलाये हुए अपने अपने घर से आये हैं ।
इमे नव शिवकृष्णगोपालमाधव- सुचन्द्रप्रक्रमभूदेवचित्रसेन महारथा अत्रत्याः ।	शिव, कृष्ण, गोपाल, माधव, सुचन्द्र, प्रक्रम, भूदेव, चित्रसेन और महारथ ये नव इस मध्य देश के रहनेवाले हैं ।
अहोभाग्यं मे यद् भवत्कृपयैतेषा- मपि समागतो जातः ।	मेरा बड़ा भाग्य है कि जो आपकी कृपा से इन सत्पुरुषों का भी मिलाप हुआ ।

अहमपि सभवतः सर्वानेतान्नि-
मन्त्रयितुमिच्छामि ।

अस्माभिर्भवन्निमन्त्रणमूरीकृतम् ।

प्रीतोऽस्मि परन्तु भवद्भोजनार्थं
किं किं पक्तव्यम् ?

यद्यद्भोक्तुमिच्छास्ति तत्तदाज्ञाप-
यन्तु ।

भवान् देशकालज्ञः कथनेन किं
यथायोग्यमेव पक्तव्यम् ।

सत्यमेव मेर करिष्यामि ।

उत्तिष्ठत भोजनसमय आगतः
पाकः सिद्धो वर्तते ।

भो भृत्य ! पाद्यमर्घ्यमाचमनीयं
जलं देहि ।

इदमानीतं गृह्यताम् ।

भो पाचकाः ! सर्वान् पदार्थान्
क्रमेण परिवेविष्ट ।

भुञ्जीध्वम् ।

भोजनस्य सर्वे पदार्थाः श्रेष्ठा न
वा ?

अत्युत्तमाः सम्पन्नाः किं कथ-
नीयम् ।

भवता किञ्चित् पायसं ग्राह्यं
यस्येच्छाऽस्ति वा ।

मैं भी आपके समेत इन सबका
निमन्त्रण करना चाहता हूँ ।

हमने आपका निमन्त्रण स्वीकार
किया ।

आपके निमन्त्रण मानने से मैं बड़ा
प्रसन्न हुआ परन्तु आपके भोजन के
लिये क्या क्या पकाया जाय ?

जिस जिस पदार्थ के भोजन की इच्छा
हो उस उसकी आज्ञा कीजिये ?

आप देशकाल को जानते हैं कहने से
क्या, यथायोग्य ही पकाना चाहिये ।

ठीक है, ऐसा ही करूँगा ।

उठिये, भोजन-समय आया, पाक
तैयार है ।

हे नौकर ! इनको पग, हाथ, मुख
धोने के लिये जल दे ।

यह लाया, लीजिये ।

हे पाचक लोगो ! सब पदार्थों को
क्रम से परोसो ।

भोजन कीजिये ।

भोजन के सब पदार्थ अच्छे हुए हैं
वा नहीं ?

क्या कहना है, बड़े उत्तम हुए हैं ।

आप थोड़ीसी खीर लीजिये वा जिसकी
इच्छा हो ।

प्रभूतं भुक्तं तृप्ताः स्मः ।

बहुत रुचि से भोजन किया, तृप्त हो गये हैं ।

तह्युत्तिष्ठत ।

तो उठिये ।

जलं देहि ।

जल दे ।

गृह्यताम् ।

लीजिये ।

ताम्बूलादीन्यानीयन्ताम् ।

पान बीड़े, इलायची आदि लाओ ।

इमानि सन्ति गृह्णन्तु ।

ये हैं, लीजिये ।

सभाप्रकरणम्

इदानीं सभायां काचिच्चर्चा विधेया ।

अब सभा में कुछ वार्तालाप करना चाहिये ।

धर्मः किं लक्षणोऽस्तीति पृच्छामि ?

मैं पूछता हूँ कि धर्म का क्या लक्षण है ?

वेदप्रतिपाद्यो न्याय्यः पक्षपात-रहितो यश्च परोपकारसत्याऽऽ-चरणलक्षणः ।

वेदोक्त, न्यायानुकूल, पक्षपातरहित और जो पराया उपकार तथा सत्या-चरणयुक्त है उसी को धर्म जानना चाहिये ।

ईश्वरः कोऽस्तीति ब्रूहि ।

ईश्वर किसको कहते हैं, आप कहिये ?

यः सच्चिदानन्दस्वरूपः सत्यगुण-कर्मस्वभावः ।

जो सच्चिदानन्दस्वरूप और जिसके गुण, कर्म, स्वभाव सत्य ही हैं वह ईश्वर कहाता है ।

मनुष्यैः परस्परं कथं कथं वर्तितव्यम् ।

मनुष्यों को एक दूसरे के साथ कैसे कैसे वर्तना चाहिये ?

धर्मसुशीलतापरोपकारैः सह यथायोग्यम् ।

धर्म, श्रेष्ठ स्वभाव और परोपकार के साथ जिनसे जैसा व्यवहार करना योग्य हो वैसा ही उनसे वर्तना चाहिये ।

आय्यवित्तचक्रवर्तिराजप्रकरणम्

अस्मिन्नायवित्तं पुरा के के चक्र-
वर्तिराजा अभूवन् ?

स्वायंभुवाद्या युधिष्ठिरपर्यन्ताः ।

चक्रवर्तिशब्दस्य कः पदार्थः ?

य एकस्मिन् भूगोले स्वकीयामाज्ञां
प्रवर्तयितु समर्थाः ।

ते कोट्टशीमाज्ञां प्राचीचरन् ?

यया धार्मिकाणां पालनं दुष्टानां
च ताडनं भवेत् ।

इस आय्यवित्त देश में पहिले कौन-
कौन चक्रवर्ती राजा हुए हैं ?

स्वयम्भू से लेके युधिष्ठिर पर्यन्त ।

चक्रवर्ती शब्द का क्या अर्थ है ।

जो एक भूगोल भर में अपनी राज-
नीतिरूप आज्ञा को चलाने में समर्थ
हों ।

वे कैसी आज्ञा का प्रचार करते थे ?

जिससे धर्मियों का पालन और दुष्टों
का ताड़न होवे ।

राजप्रजालक्षणराजनीत्यनीतिप्रकरणम्

राजा को भवितुं शक्नोति ?

यो धार्मिकाणां सभाया अधिपतित्वे
योग्यो भवेत् ।

यः प्रजां पीडयित्वा स्वार्थं
साधयेत् स राजा भवितुमर्होऽस्ति
न वा ?

नहि नहि नहि स तु दस्युः खलु ।

या राजद्रोहिणी सा तु न प्रजा
किन्तु स्तेनतुल्या मन्तव्या ।

कथं भूताः जनाः प्रजा भवितुमर्हाः ?

ये धार्मिकाः सततं राजप्रिय-
कारिणश्च ।

राजा कौन हो सकता है ?

जो धर्मात्माओं की सभा का सभापति
होने योग्य होवे ।

जो प्रजा को दुःख देकर अपना
प्रयोजन साधे वह राजा हो सकता है
वा नहीं ?

नहीं नहीं नहीं, वह तो डाकू ही है ।

जो राजव्यवहार में विरोध करे वह
प्रजा तो नहीं किन्तु उसको चोर के
समान जानना चाहिये ।

कैसे मनुष्य प्रजा होने को योग्य हैं ?

जो धर्मात्मा और निरन्तर राजा के
प्रियकारी हों ।

राजपुरुषैरप्येवमेव प्रजाप्रिय-
कारिभिः सदा भवितव्यम् ।

राजसम्बन्धी पुरुषों को भी वैसे ही
प्रजा के प्रिय करने में सदा रहना
चाहिये ।

शत्रुवशकरणप्रकरणम्

एते शत्रुभिः सह कथं वर्त्तेरन् ?
राजप्रजोत्तमपुरुषैरयः सामदाम-
भेददण्डैर्वशमानेयाः ।

ये लोग शत्रुओं के साथ कैसे वर्त्ते ?
राजा और प्रजा के श्रेष्ठ पुरुषों को
योग्य है कि अरियों को (साम)
मिलाप (दाम) कुछ देना (भेद)
आपस में उनको फोड़ देना और
(दण्ड) उनको दण्ड करके वश में
करें ।

सदा स्वराज्यप्रजासेनाकोषधर्म-
विद्यासुशिक्षा वर्द्धनीयाः ।

सब दिन अपना राज्य, प्रजा, सेना,
कोष, धर्म, विद्या और श्रेष्ठ शिक्षा
बढ़ाते रहना चाहिये ।

यथाऽधर्माविद्यादुष्टशिक्षादस्यु-
चोरादयो न वर्द्धेरस्तथा सतत-
मनुष्ठेयम् ।

जिस प्रकार से अधर्म, अविद्या, बुरी
शिक्षा, डाकू और चोर आदि न बढ़ें
वैसा निरन्तर पुरुषार्थ करना चाहिये ।
धर्मात्माओं के साथ कभी लड़ाई न
करनी चाहिये ।

धार्मिकैः सह कदापि न योद्ध-
व्यम् ।

पराजित किये शत्रुओं का भी विनय
के साथ मान करना चाहिये ।

निजिता अपि दुष्टा विनयेन
सत्कर्त्तव्याः ।

राजा और प्रजा प्राण के तुल्य एक
दूसरे की पुष्टि करके सदा सुखी रहें ।
एक दूसरे को निर्बल करने से दमा
रोग के समान दोनों निर्बल होकर
नष्ट हो जाते हैं ।

राजप्रजाजनाः प्राणवत् परस्परं
सम्पोष्य सुखिनो भवन्तु ।

कर्षिते क्षयरोगवदुभे विनश्यतः ।

सदा ब्रह्मचर्येण विद्यया च
शरीरात्मबलं वर्धनीयम् ।

सब काल में ब्रह्मचर्य और विद्या से
शरीर और आत्मा का बल बढ़ाते
रहना चाहिये ।

यथादेशकालं पुरुषार्थेन यथावत्
कर्माणि कृत्वा सर्वथा सुखायित-
व्यम् ।

देश काल के अनुसार उद्यम से ठीक
ठीक कर्म करके सब प्रकार सुखी
रहना चाहिये ।

वैश्यव्यवहारप्रकरणम्

वैश्याः कथं वर्त्तेरन् ?
सर्वा देशभाषा लेखाव्यवहारं च
विज्ञाय पशुपालनक्रयविक्रयादि-
व्यापारकुसीदवृद्धिकृषिकर्माणि
धर्मेण कुर्वन्तः ।

बनिये लोग कैसे वर्त्ते ।
सब देशभाषा और हिसाब को ठीक
ठीक जानकर पशुओं की रक्षा, लेन-
देन आदि व्यवहार, व्याजवृद्धि और
खेती-कर्म धर्म के साथ करते हुए ।

कुसीदग्रहणप्रकरणम्

यद्येकवारं दद्याद् गृह्णीयाच्च तर्हि
कुसीदवृद्ध्या द्वैगुण्ये धर्मोऽधिकेऽ-
धर्म इति वेदितव्यम् ।

जो एक बार दें लें तो व्याजवृद्धि
सहित मूलधन द्विगुण तक लेने में धर्म
और अधिक लेने में अधर्म होता है,
ऐसा जानना चाहिये ।

प्रतिमासं प्रतिवर्षं वा यदि कुसीदं
गृह्णीयाद्यदा समूलं द्विगुणं धनमा-
गच्छेत्तदा मूलमपि त्याज्यम् ।

जो महीने महीने में अथवा वर्ष वर्ष में
व्याज लेता जाय तो जब दूना धन
आजाय फिर आगे कुछ भी न लेना
चाहिये ।

नौकाविमानादिचालनप्रकरणम्

त्वं नौकाश्चालयसि न वा ?
चालयामि ।

तू नावें चलाता है वा नहीं ?
चलाता हूँ ।

नदीषु समुद्रेषु वा ?
 उभयत्र चालयामि ।
 कस्यां दिशि कस्मिन्देसे च
 गच्छन्ति ।
 सर्वासु दिक्षु पातालदेशपर्यन्तम् ।
 ताः कीदृश्यः सन्ति केन चलन्ति ?
 कैवर्त्तवायवग्निजलकलावाष्पादिभिः ।
 याः पुरुषाश्चालयन्ति ता ह्रस्वाः या
 महत्यस्ता वाय्वादिभिश्चालयन्ते
 ताश्चाश्वतरीश्यामकणश्वाख्याः
 सन्ति ।
 विमानादिभिरपि सर्वत्र गच्छाम-
 आगच्छामश्च

नदियों अथवा समुद्रों में ?
 दोनों में चलाता हूँ ।
 किस दिशा और किस देश में जाती
 हैं ?
 सर्व दिशाओं में पातालदेश अर्थात्
 अमेरिका देश पर्यन्त ।
 वे नौका कैसी और किससे चलती
 हैं ?
 मल्लाह, वायु और अग्नि जल कला-
 यन्त्र और भाफ आदि से ।
 जिनको मनुष्य चलाते हैं वे छोटी
 छोटी नौका और जो बड़ी होती हैं वे
 वायु आदि से चलाई जाती हैं उनके
 अश्वतरी और श्यामकरणाश्व आदि
 नाम हैं ।
 और विमान आदि से भी सर्वत्र जाया-
 आया करते हैं ।

क्रयविक्रयप्रकरणम्

अस्य किम्मूल्यम् ?
 पञ्च रूप्याणि ।
 गृहाणेदं वस्त्रं देहि ।
 अद्यश्वो घृतस्य कोऽर्घः ?
 मुद्रैकया सपादप्रस्थं विक्रीणते ?
 गुडस्य को भावः ?
 अष्टभिः पणैरेकसेटकमात्रं ददति ।

इसका क्या मूल्य है ?
 पांच रुपये ।
 लीजिये पांच रुपये यह वस्त्र दीजिये ।
 आजकल घी का क्या भाव है ?
 एक रुपया का सवासेर बेचते हैं ।
 गुड़ का क्या भाव है ?
 दो आने का एक सेर भर देते हैं ।

त्वमापणं गच्छ एलामानय ।
 आनीता गृहाण ।
 कस्य हृद्रे दधिदुग्धे अच्छे
 प्राप्नुतः ?
 धनपालस्य ।
 स सत्येनैव क्रयविक्रयौ करोति
 श्रीपतिर्वणिक्कीदृशोऽस्ति ?
 स मिथ्याकारी ।
 अस्मिन्संवत्सरे कियांलाभो
 व्ययश्च जातः ?
 पंच लक्षाणि लाभो लक्षद्वयस्य
 व्ययश्च ।
 भम खल्वस्मिन् वर्षे लक्षत्रयस्य
 हानिर्जाता ।
 कस्तूरी कस्मादानीयते ?
 नयपालात् ।
 बहुमूल्यमाविकं कुत आनयन्ति ?
 कश्मीरात् ।

तू दुकान पर जा, इलायची ले आ ।
 ले आया, लीजिए ।
 किसकी दुकान पर दूध और दही
 अच्छे मिलते हैं ?
 धनपाल की ।
 वह सत्य ही से लेन-देन करता है ।
 श्रीपति बनियां कैसा है ?
 वह भूठा है ।
 इस वर्ष में कितना लाभ और खर्च
 हुआ ?
 पांच लाख रुपये लाभ और दो लाख
 खर्च हुए ।
 मेरी तो इस वर्ष में तीन लाख की
 हानि हो गई ।
 कस्तूरी कहां से लाई जाती है ?
 नयपाल से ।
 दुशाले आदि कहां से लाते हैं ?
 कश्मीर से ।

गमनागमनप्रकरणम् [१]

कुत्र गच्छसि ?
 पाटलिपुत्रकम् ।
 कदाऽऽगमिष्यसि ?
 एकमासे ।
 स क्व गतः ?
 शाकमानेतुम् ।

कहाँ जाते हो ?
 पटने को ।
 कब आओगे ?
 एक महीने में ।
 वह कहाँ गया ?
 शाक लेने को ।

क्षेत्रवपनप्रकरणम्

क्षेत्राणि कर्षन्तु ।
 बीजान्युप्तानि न वा ?
 उप्तानि ।
 अस्मिन् क्षेत्रे किमुप्तम् ?
 ब्रीहयः ।
 एतस्मिन् ?
 गोधूमाः ।
 अस्मिन् किं वपन्ति ?
 तिलमुद्गमाषाढकीः ।
 एतस्मिन् किमुप्यते ?
 यवाः ।

खेत जोतो ।
 बीज बोये वा नहीं ?
 बो दिये ।
 इस खेत में क्या बोया है ?
 धान ।
 इसमें ?
 गेहूँ ।
 इस खेत में क्या बोते हैं ?
 तिल, मूँग, उड़द और अरहर ।
 इसमें क्या बोया जाता है ?
 जौ ।

शस्यच्छेदनप्रकरणम्

संप्रति केदाराः पक्वाः ।
 यदि पक्वाः स्युस्तर्हि लुनन्तु ।
 इदानीं कृषीवला अन्योन्यकेदारान्
 व्यतिलुनन्ति ।

ऐषमे धान्यानि प्रभूतानि
 जातानि ।
 अत एवैकस्या मुद्राया गोधूमाः
 खारीप्रमिता अन्यानि तण्डुलादी-
 न्यपि किञ्चदधिकन्यूनानि
 मिलन्ति ।

इस समय खेत पक गये हैं ।
 जो पक गये हों तो काटो ।
 इस समय खेती करनेवाले आपस में
 एक दूसरे का पारापारी खेत काटते
 हैं ।
 इस साल में धान्य बहुत हुए हैं ।
 इसी से एक रुपये के गेहूँ एक मन
 और चावल आदि अन्न भी मन से
 कुछ अधिक वा न्यून मिलते हैं ।

गवादिदोहनपरिमाणप्रकरणम्

इयं गौर्दुग्धं ददाति न वा ?
ददाति ।

इयं महिषी कियद्दुग्धं ददाति ?
दशप्रस्थाः ।

तवाऽजावयः सन्ति न वा ?
सन्ति ।

प्रतिदिनं ते कियद्दुग्धं जायते ?
पञ्च खार्यः ।

नित्यं किंपरिमाणे घृतनवनीते
भवतः ।

सार्द्धद्वादशप्रस्थे ।

प्रत्यहं कियद् भुज्यते कियच्च
विक्रीयते ?

सार्धद्विप्रस्थं भुज्यते दशप्रस्थं च
विक्रीयते ।

यह गौ दूध देती है वा नहीं ?
देती है ।

यह भैंस कितना दूध देती है ?
दश सेर ।

तेरे बकरी भेड़ हैं वा नहीं ?
हैं ।

नित्य तेरे कितना दूध होता है ?
पांच मन ।

प्रतिदिन कितना घी और मक्खन
होता है ?

साढ़े बारह सेर ।

प्रतिदिन कितना खाया जाता और
कितना बिकता है ?

अढ़ाई सेर खाया जाता और दश सेर
बिकता है ।

क्रयविक्रयार्थप्रकरणम्

एतद्रूप्यैकेन कियन् मिलति ?

त्रिप्रस्थम् ।

तैलस्य कियन्मूल्यम् ?

मुद्रापादेन सेटकद्वयं प्राप्यते ।

अस्मिन्नगरे कति हट्टास्सन्ति ?

पञ्चसहस्राणि ।

ये घी और मक्खन एक रुपया का
कितना मिलता है ?

तीन तीन सेर ।

तैल का क्या मूल्य है ?

चार आने का दो सेर मिलता है ।

इस नगर में कितनी दूकानें हैं ?

पांच हजार ।

कुसीदप्रकरणम्

शतं मुद्रा देहि ।

ददामि परन्तु कियत् कुसीदं
दास्यसि ?

प्रतिमासं मुद्रार्द्धम् ।

सौ रुपये दीजिए ।

देता हूँ परन्तु कितना व्याज देगा ?

प्रति महीने आठ आना ।

उत्तमर्णाधमर्णप्रकरणम्

भो अधमर्ण ! यावद्धनं त्वया पूर्वं
गृहीतं तदिदानीं देहि ।

मम सांप्रतं तु दातुं सामर्थ्यं
नास्ति ।

कदा दास्यसि ?

मासद्वयाऽनन्तरम् ।

यद्येतावति समये न दास्यसि
चेत्तर्हि राजनियमान्निग्रहीष्यामि ।

यद्येवं कुर्यात् तर्हि तथैव ग्रहीत-
व्यम् ।

हे ऋणिया ! जो धन तूने पहिले
लिया था वह अब दे ।

मेरा इस समय तो देने का सामर्थ्य
नहीं है ।

कब देगा ?

दो महीने के पीछे ।

जो तू इतने समय में न देगा तो राज-
प्रबन्ध से पकड़ा के लूंगा ।

जो ऐसा करे तो वैसे ही लेना ।

राजप्रजासम्बन्धप्रकरणम्

भो राजन् ! ममायमृणं न ददाति ।

यदा तेन गृहीतं तदानीन्तनः
कश्चित् साक्षी वर्तते न वा ?

अस्ति ।

तद्वानिय ।

आनीतोऽयमस्ति ।

हे राजन् ! मेरा यह ऋण नहीं देता ।

जब उसने लिया था उस समय का
कोई साक्षी वर्तमान है वा नहीं ?

है ।

तो लाओ ।

लाया यह है ।

साक्षिप्रकरणम्

भोः साक्षिस्त्वमत्र किञ्चिज्जा-
नासि न वा ?

हे साक्षी ! तू इस विषय में कुछ
जानता है वा नहीं ?

जानामि ।

यादृशं जानासि तादृशं सत्यं
ब्रूहि ।

सत्यं वदामि ।

अस्मादनेन मत्समक्षे सहस्रं मुद्रा
गृहीताः ।

ओ भृत्य ! तं शीघ्रमानय ।

आनयामि ।

गच्छ राजसभायां राजा त्वमाहू-
तोऽसि ।

चलामि ।

भो राजन्नुपस्थितस्सः ।

त्वयाऽस्यर्णं कुतो नादायि ?

अस्मिन् समये तु मम सामर्थ्यन्ना-
स्ति षण्मासानन्तरं दास्यामि ।

पुनर्विलम्बन्तु न करिष्यसि ?

महाराज ! कदापि न करिष्यामि ।

अच्छ गच्छ धनपाल ! यदि सप्तमे
मास्ययं न दास्यति तर्ह्येनं निगृह्य
दापयिष्यामि ।

अयं मम शतं मुद्रा गृहीत्वाऽधुना
न ददाति ।

किं च भो यदयं वदति तत् सत्यं
न वा ?

मिथ्यैवाऽस्ति ।

अहन्तु जानाम्यपि नाऽस्य मुद्रा
मया कदा स्वीकृताः ।

जानता हूँ ।

जैसा जानता है वैसा सच कह ।

सत्य कहता हूँ ।

इससे इसने मेरे सामने सहस्र रुपये
लिये थे ।

ओ नौकर ! उसको जल्दी ले आ ।

लाता हूँ ।

चल राजसभा में राजा ने तुम्हको
बुलाया है ।

चलता हूँ ।

हे राजन् ! वह आया है ।

तूने इसका ऋण क्यों नहीं दिया ?

इस समय तो मेरा सामर्थ्य नहीं है
परन्तु छः महीने के पीछे दूंगा ।

फिर देर तो न करेगा ?

महाराज ! कभी न करूंगा ।

अच्छा जाओ धनपाल ! जो यह
सातवें महीने में न देगा तो इसको
पकड़ के दिला दूंगा ।

यह मेरे सौ रुपये लेके अब नहीं देता ।

क्योंजी ! जो यह कहता है वह सच है
वा नहीं ?

भूँठ ही है ।

मैं तो जानता भी नहीं कि इसके रुपये
मैंने कब लिये थे ।

उभयोस्साक्षिणः सन्ति न वा ?
सन्ति ।

कुत्र वर्तन्ते ?

इम उपतिष्ठन्ते ।

अनेन युष्माकं समक्षे शतं मुद्रा
दत्ता न वा ?

दत्तास्तु खलु ।

अनेन शतं मुद्रा गृहीता न वा ?

वयं न जानीमः ।

प्राङ्विवाकेनोक्तम्—

“अयमस्य साक्षिणश्च सर्वे मिथ्या-
वादिनः सन्ति ।

कुत इदमेतेषां परस्परं विरुद्ध-
वचोऽस्ति ।

यतस्त्वया मिथ्यालपितमतएव
तवैकसंवत्सरपर्यन्तं कारागृहे
बन्धः क्रियते ।

अयमुत्तमर्णस्त्वदीयान् पदार्थान्
गृहीत्वा विक्रीय वा स्वर्णं
ग्रहीष्यति ।

अयं मदीयानि पञ्चशतानि
रूप्याणि स्वीकृत्य न ददाति ।

कुतो न ददासि ?

मया नैव गृहीताः कथं दद्याम् ?

अयम्मम लेखोऽस्ति पश्य तम् ।

आनय ।

गृह्यताम् ।

दोनों के साक्षी लोग हैं वा नहीं हैं ?
हैं ।

कहां वर्तमान हैं ?

ये खड़े हैं ।

इसने तुम्हारे सामने सौ रुपये दिये वा
नहीं ?

निश्चित दिये तो हैं ।

इसने सौ रुपये लिये वा नहीं ?

हम नहीं जानते ।

वकील ने कहा—

यह और इसके साक्षी लोग सब झूठ
बोलनेवाले हैं ।

क्योंकि यह इन लोगों का वचन
परस्पर विरुद्ध है ।”

जिससे तूने झूठ बोला इसी कारण
तेरा एक वर्ष तक बन्दीघर में बन्धन
किया जाता है ।

यह सेठ तेरे पदार्थों को लेकर अथवा
बेच के अपने ऋण को ले लेगा ।

यह मेरे पांच सौ रुपये लेकर नहीं
देता ।

तू क्यों नहीं देता ?

मैंने लिये ही नहीं कैसे दूँ ?

यह मेरा लेख है देखिये इसको ।

लाओ ।

लीजिये ।

अयं लेखो मिथ्या प्रतिभाति ।
तस्मात् त्वं षण्मासान् कारागृहे
वस तवेमे साक्षिणश्च द्वौ द्वौ
मासौ तत्रैव वसेयुः ।

यह लेख भूँठ मालूम पड़ता है ।
इससे तू छः महीने बन्दीगृह में रह
और तेरे साक्षी दो दो महीने वहीं
रहें ।

सेव्यसेवकप्रकरणम्

भो मङ्गलदास ! सेवार्थं कैङ्कर्यं
करिष्यसि ?
करिष्यामि ।
किं प्रतिमासं मासिकं ग्रहितु-
मिच्छसि ?
पञ्च रूप्याणि ।
मयैतावद्दास्यते चेद्यथायोग्या परि-
चर्या विधेया ।
यदाहं भवन्तं सेविष्ये तदा
भवानपि प्रसन्न एव भविष्यति ।
दन्तधावनमानय ।
स्नानार्थं जलमानय ।
उत्तरीयं वस्त्रं देहि ।
आसनं स्थापय ।
पाकं कुरु ।
हे सूद ! त्वयाऽन्नं व्यञ्जनं च
सुष्ठु सम्पादनीयम् ।
अद्य किं किं कुर्याम् ?
पायसमोदकौदनसूपरोटिका-
शाकान्युपव्यञ्जनादीनि च ।

हे मंगलदास ! सेवा के लिये नौकरी
करेगा ?
करूँगा ।
प्रति महीने कितना वेतन लिया चाहता
है ।
पाँच रुपये ।
मैं इतना दूँगा जो तुझसे ठीक ठीक
सेवा हो सकेगी ।
जब मैं आपकी सेवा करूँगा तब आप
भी प्रसन्न ही होंगे ।
दातून ले आ ।
नहाने के लिये जल ला ।
अंगोछा दे ।
आसन रख ।
रसोई कर ।
हे रसोइये ! तू अन्न और शाक आदि
उत्तम बना ।
आज क्या क्या करूँ ?
खीर, लड्डू, चावल, दाल, रोटी, शाक
और चटनी आदि बना ।

मिश्रितप्रकरणम् [१]

नित्यप्रति किं वेतनं दास्यसि ?
 प्रत्यहं द्वादश पणाः ।
 वस्त्राणि श्लक्ष्णे पट्टे प्रक्षालनी-
 यानि ।
 गा वने चारय ।
 पुष्पवाटिकायां गन्तव्यमस्ति ।
 आम्रफलानि पक्वानि न वा ?
 पक्वानि सन्ति ।
 उपानहावानय ।

नित्यप्रति क्या नौकरी दोगे ?
 प्रतिदिन बारह पैसे ।
 कपड़े चिकने साफ पत्थर की पटिया
 पर धोने चाहिये ।
 गायें वन में चरा ।
 फूलों की बगीची में जाना है ।
 आम पके वा नहीं ?
 पके हैं ।
 जूते लाओ ।

गमनागमनप्रकरणम् [२]

अयं रक्तोष्णीषः क्व गच्छति ?
 स्वगृहम् ।
 अस्य कदा जन्माऽभूत् ?
 पञ्च संवत्सरा अतीताः ।
 परेद्युर्ग्रामो गन्तव्यः ।
 गमिष्यामि ।
 भवान् परेद्युः क्व गन्ता ?
 अयोध्याम् ।
 तत्र किं कार्यमस्ति ।
 मित्रैः सह मेलनं कर्तव्यमस्ति ।
 कदागतोऽसि
 इदानीमेवाऽऽगच्छामि ।

यह लाल पगड़ीवाला कहां जाता है ?
 अपने घर को ।
 इसका जन्म कब हुआ था ?
 पांच वर्ष बीते ।
 कल गांव जाना चाहिये ।
 जाऊंगा ।
 आप कल कहां जाओगे ?
 अयोध्या को ।
 वहां क्या काम है ?
 मित्रों के साथ मेल कर्तव्य है ।
 कब आया है ?
 अभी आता हूं ।

रोगप्रकरणम्

अस्य कीदृशो रोगो वर्तते ?

जीर्णज्वरोस्ति ।

औषधं देहि ।

ददामि ।

परन्तु पथ्यं सदा कर्त्तव्यं कुतो
नहि पथ्येन विना रोगो निवर्त्तते ।

अयं कुपथ्यकारित्वात् सदा रुग्णो
वर्त्तते ।

अस्य पित्तकोपो वर्त्तते ।

मम कफो वर्द्धत औषधं देहि ।

निदानं कृत्वा दास्यामि ।

अस्य महान् कासश्वासोऽस्ति ।

मम शरीरे तु वातव्याधिर्वर्त्तते ।

संग्रहणी निवृत्ता न वा ?

अद्यपर्यन्तं तु न निवृत्ता ।

औषधं संसेव्य पथ्यं करोषि न
वा ?

क्रियते परन्तु सुवैद्यो न मिलति
कश्चिद्यः सम्यक् परीक्ष्यौषधं
दद्यात् ।

तृषाऽस्ति चेज्जलं पिब ।

इसको किस प्रकार का रोग है ?

जीर्णज्वर है ।

औषध दे ?

देता हूँ ।

परन्तु पथ्य सदा करना चाहिये क्योंकि
पथ्य के बिना रोग निवृत्त नहीं होता ।

यह कुपथ्यकारी होने से सदा रोगी
रहता है ।

इसको पित्त कोप है ।

मेरे कफ बढ़ता जाता है, औषध
दीजिये ।

रोग की परीक्षा करके दूंगा ।

इसको बड़ा कासश्वास अर्थात् दमा
है ।

मेरे शरीर में तो वातव्याधि है ।

संग्रहणी छूटी वा नहीं ।

आज तक तो नहीं छूटी ।

औषधि का सेवन करके पथ्य करते
हो वा नहीं ?

करता तो हूँ परन्तु अच्छा वैद्य कोई
नहीं मिलता कि जो अच्छे प्रकार
परीक्षा करके औषध देवे ।

प्यास हो तो जल पी ।

मिश्रितप्रकरणम् [२]

इदानीं शीतं निवृत्तमुष्णसमय
आगतः ।

हेमन्ते क्व स्थितः ?

वंगेषु ।

पश्य ! मेघोन्नतिं कथं गर्जति
विद्युद् द्योतते च ।

अद्यमहती वृष्टिर्जाता यया तडागा
नद्यश्च पूरिताः ।

शृणु, मयूराः सुशब्दयन्ति ।

कस्मात् स्थानादागतः ?

जङ्गलात् ।

तत्र त्वया कदापि सिंहो दृष्टो न
वा ?

बहुवारं दृष्टः ।

नदी पूर्णा वर्तते कथमागतः ?

नौकया ।

आरोहत हस्तिनं गच्छेम ।

अहं तु रथेनागाच्छामि ।

अहमश्वोपरि स्थित्वा गच्छेयं
शिविकायां वा ?

पश्य ! शारदं नभः कथं निर्मलं
वर्तते ।

चन्द्र उदितो न वा ?

इदानीन्तु नोदितः खलु ।

कीदृश्यस्तारकाः प्रकाशन्ते ।

अब तो शीत निवृत्त हुआ, गरमी का
समय आया ।

जाड़े में कहां रहा था ?

बङ्गाल में ।

देखो ! मेघ की बढ़ती, कैसा गर्जता
और बिजली चमकती है ।

आज बड़ी वर्षा हुई जिससे तालाव
और नदियां भर गई ।

सुनो, मोर अच्छा शब्द करते हैं ।

किस स्थान से आया ?

जङ्गल से ।

वहां तूने कभी सिंह भी देखा था वा
नहीं ?

कई बेर देखा ।

नदी भरी है, कैसे आया ?

नाव से ।

चढ़ो हाथी पर, चलें ।

मैं तो रथ से आता हूँ ।

मैं घोड़े पर चढ़ के जाऊँ अथवा
पालकी पर ?

देखो ! शरद ऋतु का आकाश कैसा
निर्मल है ।

चन्द्रमा उगा वा नहीं ?

इस समय तो नहीं उगा है ।

किस प्रकार तारे प्रकाशमान हो रहे हैं ।

सूर्योदयाच्चलन्नागच्छामि ।
क्वापि भोजनं कृतन्न वा ?
कृतम्मध्याह्नात् प्राक् ।
अधुनाऽत्र कर्तव्यम् ।
करिष्यामि ।

सूर्योदय से चलता हुआ आता हूँ ?
कहीं भोजन किया वा नहीं ?
किया था दोपहर से पहिले ।
अब यहां कीजिये ।
करूंगा ।

विवाहस्त्रीपुरुषालापप्रकरणम्

त्वया कीदृशो विवाहः कृतः ?
स्वयंवरः ।
स्वयनुकूलास्ति न वा ?
सर्वथाऽनुकूलाऽस्ति ।
कत्यपत्यानि जातानि सन्ति ?
चत्वारः पुत्रा द्वे कन्ये च ।
स्वामिन्नमस्ते ।

तूने किस प्रकार का विवाह किया था ?
स्वयंवर ।
स्त्री अनुकूल है वा नहीं ?
सब प्रकार से अनुकूल है ।
कितने लड़के [= सन्तान] हुए हैं ?
चार पुत्र और दो कन्या ।
स्वामीजी ! नमस्ते, अर्थात् आपका
सत्कार करती हूँ ।
नमस्ते प्रिया !
किसी सेवा की आज्ञा करिये ।
सब प्रकार की सेवा करती ही हो, फिर
आज्ञा कराने की क्या आवश्यकता है ।

अद्य भवाञ्छूमं कृतवानत उष्णेन
जलेन स्नातव्यम् ।
गृहाणेदं जलमासनं च ।
इदानीं भ्रमणाय गन्तव्यम् ।

आज आपने श्रम किया है, इस कारण
गरम जल से स्नान करना चाहिये ।
लीजिये यह जल और आसन ।
इस समय घूमने के लिये जाना
चाहिये ।
कहां चलें ?
बगीचों में ।

क्व गच्छेव ?
उद्यानेषु ।

स्त्रीश्वश्रूश्वशुरादिसेव्यसेवकप्रकरणम्

हे श्वश्रू ! सेवामाज्ञापय किं
कुर्याम् ?
सुभगे ! जलं देहि ।
गृहाणेदमस्ति ।
हे श्वशुर ! भवान् किमिच्छत्या-
ज्ञापयतु ।
हे वशंवदे ! नित्यं सदाचार-
माचर ।

हे सास ! सेवा की आज्ञा कीजिये क्या
करूं ?
सुभगे ! जल दे ।
लीजिये, यह है ।
हे श्वसुर ! आपकी क्या इच्छा है
आज्ञा कीजिये ।
हे वशंवदे ! नित्य सती स्त्रियों का
आचरण कर ।

ननन्दभ्रातृजायावादप्रकरणम्

हे ननन्दरिहागच्छ वात्तिलापं
कुर्याव ।
वद भ्रातृजाये ! किमिच्छसि ?
तव पतिः कीदृशोऽस्ति ?
अतीव सुखप्रदो यथा तव ।
मया त्वीदृशः पतिः सौभाग्येन
लब्धोऽस्ति ।
कदाचिदप्रियं तु न करोति ?
कदापि नहि किन्तु सर्वदा प्रीतिं
वर्द्धयति ।
पश्याभ्यां बाल्यावस्थायां विवाहः
कृतोऽतः सदा दुःखिनौ वर्तते ।

हे ननन्द ! यहां आओ बातचीत
करें ।
कहो भौजाई ! क्या इच्छा है ?
तेरा पति कैसा है ?
अत्यन्त सुख देने वाला है, जैसा तेरा ।
मैंने तो इस प्रकार का पति अच्छे
भाग्य से पाया है ।
कभी प्रतिकूल तो नहीं करता ?
कभी नहीं किन्तु सब दिन प्रीति
बढ़ाता है ।
देखो इन दोनों ने बाल्यावस्था में
विवाह किया है, इससे सदा दुःखी
रहते हैं ।
जो लड़के हुए वे भी रोगी हैं, आगे
लड़का होने की आशा ही नहीं है
निर्बलता से ।

यान्यपत्यानि जातानि तान्यपि
रुग्णान्यग्रेऽपत्यस्याऽऽशैव नास्ति
निर्बलत्वात् ।

पश्य तव मम च कीदृशानि पुष्टा-
न्यपत्यानि द्विवर्षानन्तरं जायन्ते ।
सर्वदा प्रसन्नानि सन्ति वर्द्धन्ते च
सुशीलत्वात् ।

नह्यस्मिन् संसारेऽनुकूलस्त्रीपति-
जन्यसदृशं सुखं किमपि विद्यते ।

इदानीं वृद्धाऽवस्था प्राप्ता यौवनं
गतं केशाः श्वेता जाताः प्रतिदिनं
बलं ह्रसति च ।

स इदानीं गमनागमनमपि कर्तु-
मशक्तो जातः ।

बुद्धिविपर्यासत्वाद्विपरीतं भाषते ।

अद्याऽस्य मरणसमय आगत
ऊर्ध्वश्वासत्वात् ।

सोऽद्य मृतः ।

नीयतां श्मशानं वैदमन्त्रैर्घृतादि-
भिर्दह्यताम् ।

शरीरं भस्मीभूतं जातमतस्तृती-
येऽह्न्यस्थिसंचयनं कृत्वा पुनस्त-
न्निमित्तं शोकादिकं किञ्चिदपि नैव
कार्यम् ।

त्वं मातापित्रोः सेवां न करोष्यतः
कृतघ्नो वर्त्तसेऽतो मातापितृसेवा
केनापि नैव त्याज्या ।

देखो ! तेरे और मेरे कैसे पुष्ट लड़के
दो वर्ष के पीछे होते जाते हैं ।

सब काल में प्रसन्न और बढ़ते जाते
हैं सुशीलता से ।

इस संसार में अनुकूल स्त्री और पुरुष
से होनेवाले सुख के सदृश दूसरा सुख
कोई नहीं है ।

इस समय वृद्धावस्था आई, जवानी
गई, बाल सफेद हुए और नित्य बल
घट रहा है ।

वह इस समय आने-जाने को भी
असमर्थ हो गया है ।

बुद्धि विपरीत होने से उलटा बोलता है ।

आज इसके मरने का समय आया, ऊपर
को श्वास के चलने से ।

वह आज मर गया ।

ले चलो श्मशान को, वेदमन्त्रों करके
घी आदि सुगन्ध से जला दो ।

शरीर भस्म हो गया, इससे तीसरे
दिन हाड़ों को वेदी से इकट्ठे कर
उठा के फिर उसके निमित्त शोकादि
कुछ भी न करना चाहिये ।

तू माता-पिता की सेवा नहीं करता
इससे कृतघ्नी है, इसलिए माता-पिता
की सेवा का त्याग किसी को कभी न
करना चाहिये ।